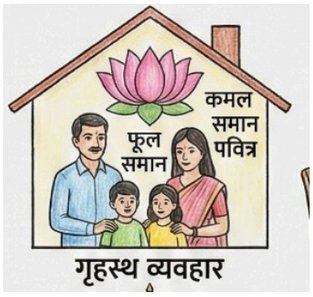


17-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



"मीठे बच्चे - हियर नो ईविल, एक बाप से ही सुनना है, गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहना है"









प्रश्नः- किस खेल को यथार्थ रीति जानने वाले बच्चे कभी मूँझ नहीं सकते हैं?



उत्तरः- दुःख और सुख, भक्ति और ज्ञान का जो खेल चलता है, इसको यथार्थ रीति जानने वाले कभी मूँझते नहीं। तुम जानते हो भगवान किसी को दुःख नहीं देता, वह है दुःख हर्ता सुख कर्ता। जब सभी दुःखी हो जाते हैं, तब दुःखों से लिबरेट करने के लिए वह आते हैं।

गीतः- यह कौन आज आया सवेरे-सवेरे..... Click

ये कौन आज आया सवेरे सवेरे
ये कौन आज आया सवेरे सवेरे
के दिल चौंक उठा सवेरे सवेरे

कहा रूप ने चाँद है चौधवीं का
कहा रूप ने चाँद है चौधवीं का
मगर चाँद कैसा सवेरे सवेरे

गया मन का धीरज बढ़ी बेकली भी
गया मन का धीरज बढ़ी बेकली भी
ये मुझको हुआ क्या
ये मुझको हुआ क्या सवेरे सवेरे

आते ही एक तरहादार ने दिल छीन लिया
आते ही एक तरहादार ने दिल छीन लिया
दिलरुबा बन के दिलदार ने दिल छीन लिया
बांकी चितवन के पीछे यार ने दिल छीन लिया
देके धोखा किसी अयार ने दिल छीन लिया

आँखों में जादू बातों में शोला
आँखों में जादू बातों में शोला
दिया कैसा चरखा सवेरे सवेरे
दिया कैसा चरखा सवेरे सवेरे
ये कौन आज आया सवेरे सवेरे



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा

A Doctor of Philosophy (PhD or Ph.D.) is the highest academic degree awarded by a university. It signifies that a student has completed advanced study, conducted original and independent research, and made a new contribution to their field.

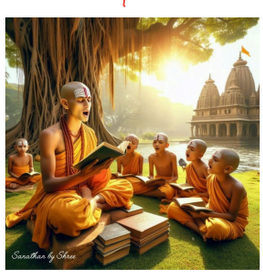


ओम् शान्ति। बच्चों ने क्या सुना? भक्ति का गीत। भक्ति को अंग्रेजी में फिलासॉफी कहते हैं। टाइटल मिलते हैं डॉक्टर ऑफ फिलासॉफी। अब फिलासॉफी (भक्ति) तो छोटे बड़े मनुष्य सब जानते हैं। कोई से भी पूछो ईश्वर कहाँ रहते हैं, तो कह देंगे सर्वव्यापी है। यह भी फिलासॉफी हुई ना। अब शास्त्रों की कोई भी बात बाप नहीं सुनाते। कोई भी भगत को ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। न उनमें ज्ञान है, न ज्ञान सागर के बच्चे हैं। But we know, How Lucky & Great we are..! ज्ञान सागर बाप को कोई नहीं जानते हैं। न अपने को बच्चा समझते हैं। वह सब भक्ति करते हैं भगवान से मिलने के लिए। परन्तु भगवान को जानते नहीं तो भक्ति से क्या फायदा होगा। बहुतों को यह टाइटिल मिलता होगा डॉक्टर ऑफ फिलासॉफी, उन्हों की बुद्धि में तो एक ही बात है कि ईश्वर सर्वव्यापी है। उसको फिलासॉफी समझते हैं, इससे ही गिरते आये हैं, इसको कहा जाता है धर्म ग्लानि। हम कोई भी मनुष्यों से शास्त्रों का कुछ वाद-विवाद नहीं कर सकते। हम कोई मनुष्य से पढ़े हुए नहीं हैं और सब मनुष्य, मनुष्य द्वारा पढ़े हुए होते हैं। वेद शास्त्र आदि सब मनुष्य से ही पढ़ते हैं। बनाये भी मनुष्यों ने हैं। तुमको तो यह





V/S



Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

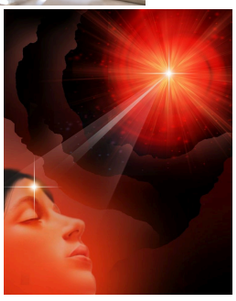
Why...? → Refer last page

M.M.M.....imp.

ज्ञान सुनाने वाला है एक ही रूहानी बाप। वह एक ही बार आकर समझाते हैं। अब हमको कोई मनुष्य से कुछ भी सीखना नहीं है। तुमको अब स्प्रीचुअल बाप से ही सुनना है। सुनने वाले हैं रूहानी बच्चे, आत्मायें। वह सब मनुष्य, मनुष्य को सुनाते हैं। यह है रूहानी बाप का ज्ञान। वह है मनुष्यों का ज्ञान। यह बाबा (गाया) भी (साकार) मनुष्य है ना। बोलो, रूहानी बाप इस द्वारा सुनाते हैं। हम रूह सुनते हैं। हम रूह फिर शरीर द्वारा औरों को सुनाते हैं। यह है रूहानी ज्ञान। बाकी सब है जिस्मानी। भक्ति में जिस्म की पूजा करते हैं। बाप कहते हैं- तुम अपने को मनुष्य या भगत न समझो। अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। तुम आत्मायें भाई-भाई हो। गाया हुआ भी है आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल.. तो हमको कोई भी मनुष्य से सुनना नहीं है। कोई सवाल पूछे तो बोलो हमारा कोई शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। हम उसको फिलासॉफी कहते हैं अर्थात् भक्ति मार्ग का ज्ञान है। सद्गति देने का ज्ञान सिर्फ एक बाप ही देते हैं। सर्व का सद्गति दाता एक ही गाया हुआ है। तो तुम बच्चों को कोई से डिबेट नहीं करनी है।







आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल, सुन्दर मेला कर दिया जब सतगुरु मिला दलाल।
आत्मा और परमात्मा बहुत काल से (सतयुग से कलियुग अन्त तक) अलग रहे। अब सतगुरु परमात्मा शिव धरती पर आकर आत्माओं से मिलन मनाते हैं। आत्मा परमात्मा से अलग हुए 5000 वर्ष हुए। अब आत्मा का परमात्मा के साथ इस संगमयुग पर जो सुन्दर मिलन मेला होता है, वह ब्रह्माबाबा दलाल के माध्यम से होता है।

ये तो पक्का कर लो..



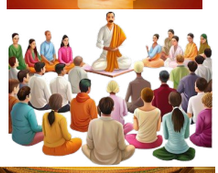
फिलासॉफी





Words of world Almighty Authority

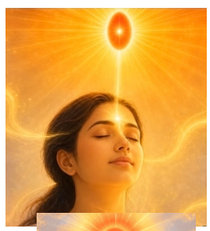




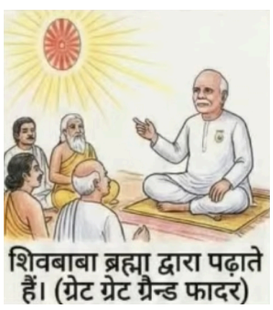


बाप कहते हैं ज्ञान की अथॉरिटी, ज्ञान सागर मैं हूँ। मैं तुमको कोई शास्त्र आदि नहीं सुनाता हूँ। हमारा यह है रूहानी ज्ञान। बाकी सब है जिस्मानी ज्ञान। वह सतसंग आदि सब भक्ति मार्ग के लिए हैं। यह रूहानी बाप बैठ रूहों को समझाते हैं इसलिए देही-अभिमानी बनने में बच्चों को मेहनत लगती है। हम आत्मायें बाप से वर्सा लेती हैं। बाप के बच्चे जरूर बाप की ही गद्दी के वारिस होंगे ना। लक्ष्मी-नारायण भी देहधारी हैं। उनके बच्चे जिस्मानी बाप से वर्सा पाते हैं। यह बात ही न्यारी है। सतयुग में भी जिस्मानी बात हो जाती है। वहाँ यह नहीं कहेंगे कि रूहानी बाप से वर्सा मिलता है। देह-अभिमान को तोड़ना है। हम आत्मा हैं और बाप को याद करना है। यही भारत का प्राचीन योग गाया हुआ है। याद अक्षर हिन्दी का है। तो यह नॉलेज तुमको अभी कौन देते हैं? यह कोई मनुष्य नहीं जानते हैं। जन्म-जन्मान्तर मनुष्य, मनुष्य से बात करते आये हैं। अभी रूहानी बाप रूहानी बच्चों से बात करते हैं। रूह सुनाते हैं इसलिए इसको रूहानी स्प्रीचुअल नॉलेज कहा जाता है। गीता को भी वह स्प्रीचुअल नॉलेज समझते

Point to be Noted







शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा पढ़ाते हैं। (ग्रेट ग्रेट ग्रैन्ड फादर)



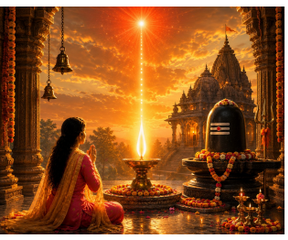


हैं, परन्तु उसमें नाम श्रीकृष्ण देहधारी का डाल दिया है। बाप कहते हैं कि कोई भी मनुष्य में यह नॉलेज हो नहीं सकती। कभी भी कोई तुमसे डिबेट करते हैं तो बोलो, यह है तुम्हारा भक्ति का ज्ञान। मनुष्यों के बनाये हुए शास्त्रों का ज्ञान। सत्य ज्ञान तो एक ज्ञान सागर बाप के पास ही है, वही खुद नॉलेज दे रहे हैं। उन्हें सुप्रीम बाप कहते हैं। पूजा भी उस निराकार की होती है। अगर और निराकारियों की पूजा होती है तो वह भी उनके बच्चे ही हैं। मिट्टी का शालिग्राम बनाकर पूजा करते हैं। रूद्र यज्ञ रचते हैं।



Exclusive Authority of Shiv baba









तुम जानते हो वह परमपिता परमात्मा निराकारी दुनिया में रहते हैं। हम आत्मायें भी वहाँ रहती हैं। वह ज्ञान का सागर आकर ज्ञान सुनाए सबकी सद्गति कर देते हैं। वह है परे ते परे रहने वाला परमपिता परमात्मा। सभी आत्मायें ब्रदर्स को पार्ट मिला हुआ है, जो फिर शरीर धारण कर भाई बहिन बनते हैं। आत्मा सब एक बाप के बच्चे हैं। आत्मा जब शरीर धारण करती है तो स्वर्ग में सुख, नर्क में दु:ख को









सेवा

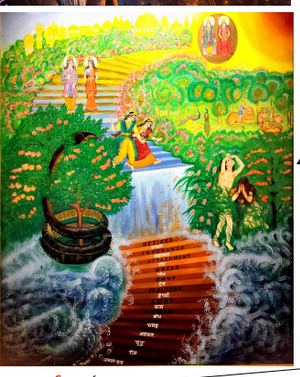




पाती है। यह क्यों होता है? समझाया जाता है - ज्ञान और भक्ति। वह है दिन, वह है रात। ज्ञान से सुख, भक्ति से दुःख, यह खेल बना हुआ है। ऐसे नहीं कि



दुःख सुख सब भगवान ही रचते हैं। भगवान को बुलाते ही तब हैं जब दुःखी होते हैं। समझते हैं वह



सुख देने वाला है। फिर जब सुख का समय पूरा होता है फिर रावण 5 विकारों के कारण दुःख शुरू होता है। यही खेल है, जिसे यथार्थ रीति समझना है।

यथार्थ:
यह संस्कृत भाषा का शब्द है जो 'यथा' (जैसे) और 'अर्थ' (मतलब) से मिलकर बना है।
यथार्थ का सामान्य अर्थ वास्तविकता, सत्य या किसी वस्तु/घटना का जैसा है वैसा ही रूप है। यह कल्पना या भ्रम से बिल्कुल अलग होता है।

इसे ही रूहानी ज्ञान कहा जाता है। बाकी है सब जिस्मानी ज्ञान, वह हम सुनने नहीं चाहते हैं। हमको हुक्म मिला हुआ है सिर्फ मुझ निराकार बाप से ही



सुनो। बाप कहते हैं - हियर नो ईविल... हम एक भगवान से सुनते हैं। तुम मनुष्यों से सुनते हो। रात-



दिन का फर्क है। बड़े-बड़े विद्वान शास्त्र आदि पढ़ते हैं। वह तो हमने भी बहुत पढ़े। अब भगवान कहते हैं तुमने गुरू बहुत किये हैं, अब उनको छोड़ो, मैं जो



सुनाता हूँ वह सुनो। भगवान है ही निराकार, उनका नाम है शिव। अभी हम उनसे सुन रहे हैं। बाप खुद अपना परिचय और अपनी रचना के आदि मध्य





अन्त का परिचय देते हैं। फिर हम आपसे शास्त्रों आदि की बातें सुनें ही क्यों! हम आपको रूहानी

नॉलेज सुनाते हैं। सुनना हो तो सुनो। मूँझने की तो कोई बात ही नहीं। सारी दुनिया है एक तरफ और तुम कितने थोड़े हो। बाप अब कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे ऊपर जो पापों का बोझा है वह उतर जायेगा और तुम पवित्र बन जायेंगे। जो पवित्र बनेंगे वही पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। अभी पुरानी दुनिया बदलनी है। कलियुग के बाद सतयुग आना है। सतयुग है पावन दुनिया। कलियुग में ही मुझे बुलाते हैं कि आकर पावन दुनिया बनाओ। सो मैं अब आया हूँ, मामेकम् याद करो। अब दुनिया बदल रही है। यह अन्तिम जन्म है। इस पुरानी दुनिया में आसुरी राज्य खलास हो रामराज्य स्थापन हो रहा है इसलिए अब अन्तिम जन्म गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान पवित्र बनो। यह विषय सागर है ना। कमल फूल पानी के ऊपर रहता है। तो अब तुम गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल के समान पवित्र बनो। तुम बच्चे जानते हो हम राजाई स्थापन कर रहे हैं। अभी सारी दुनिया बदलनी है। वह धर्म स्थापक सिर्फ अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं। पहले वह पावन होते हैं फिर पतित बनते हैं। सतगुरू तो एक ही सद्गति दाता है। मनुष्य गुरू करते ही तब हैं जब





Simple Math..

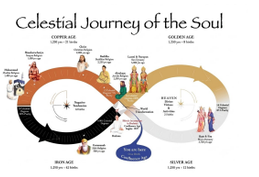
















17-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



सद्गति में जाना चाहते हैं। जब पाप बहुत होते हैं तब रूहानी बाप ज्ञान सुनाते हैं। भक्ति का फल ज्ञान तुमको भगवान से मिलता है। भगवान कोई भक्ति नहीं सिखलाते हैं। वह तो ज्ञान देते हैं। कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे

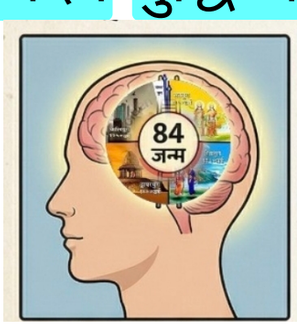
One & Only way

और कोई पावन बनने का रास्ता ही नहीं। नई दुनिया में सब स्वर्गवासी थे। अब पुरानी दुनिया में सब नर्कवासी हैं इसलिए बाप कहते हैं कि "मैं सबका उद्धार करने आता हूँ। मैं ही आकर रूहानी ज्ञान देता हूँ।" बाप अपना परिचय दे रहे हैं। "मैं तुम्हारा बाप हूँ।" अभी यह है नर्क। नई दुनिया को स्वर्ग कहा जाता है। ऐसे कैसे कहेंगे कि यहाँ ही स्वर्ग नर्क है, जिनको बहुत धन है वह स्वर्ग में हैं। स्वर्ग तो होता ही है नई दुनिया में। यहाँ स्वर्ग कहाँ से आया इसलिए हम कोई मनुष्यों की बात सुनते नहीं। बाप कहते हैं तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है तो मामेकम् याद करो। सारा दिन बुद्धि में यह नॉलेज रहनी चाहिए। अच्छा!

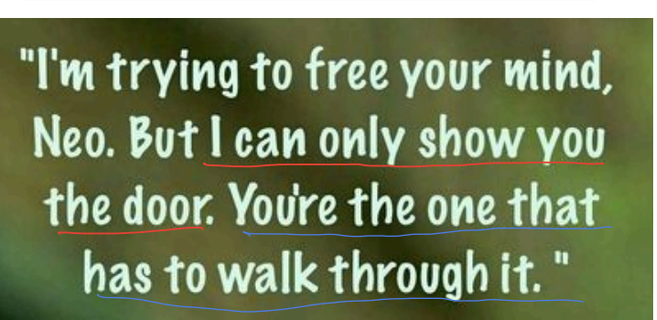








Choice is All yours...



योग धारणा सेवा M.imp.

choice is yours

17-10-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन



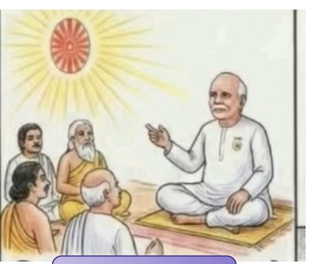
मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।



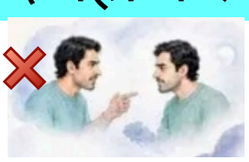


धारणा के लिए मुख्य सार:-

None but Only One



1) एक बाप से ही रूहानी बातें सुननी है। किसी से दूसरी बातों का वाद-विवाद नहीं करना है।





2) देही-अभिमानी बनने की मेहनत करनी है। सतोप्रधान बनने के लिए एक बाप की याद में रहना है।





Points: ज्ञान योग M.imp.



वरदान:- कर्म द्वारा गुणों का दान करने वाले डबल लाइट फरिश्ता मूर्त भव



Characteristics of

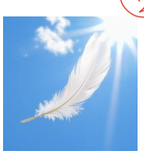
जो बच्चे कर्मणा द्वारा गुणों का दान करते हैं

1. उनकी चलन और चेहरा दोनों ही फरिश्ते की तरह दिखाई देते हैं।

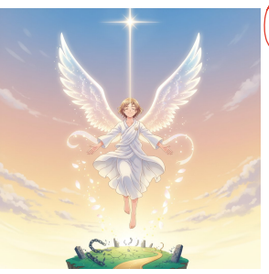


2. वे डबल लाइट अर्थात् प्रकाशमय और हल्केपन की अनुभूति करते हैं।

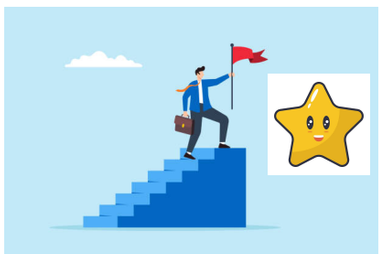




3. उन्हें कोई भी बोझ महसूस नहीं होता है। हर कर्म में मदद की महसूसता होती है। जैसे कोई शक्ति चला रही है।



4. हर कर्म द्वारा महादानी बनने के कारण उन्हें सर्व की आशीर्वाद वा सर्व के वरदानों की प्राप्ति का अनुभव होता है।





स्लोगन:- सेवा में सफलता का सितारा बनो, कमजोर नहीं।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

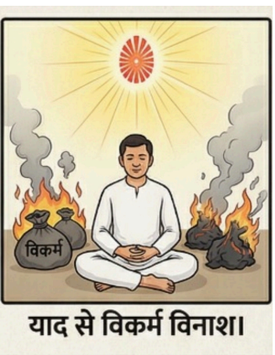


मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य

"ज्ञान, योग और दैवी गुणों की धारणा जीवन का आधार है"



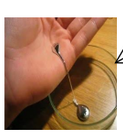
यह तो अपने को निश्चय है कि परमपिता परमात्मा द्वारा हमें नॉलेज मिल रही है, इस नॉलेज में मुख्य तीन प्वॉइन्ट हैं जिसके लिये अपने को पूरा पुरुषार्थ करने का ध्यान रखना है। इसमें पहले है योग अथवा ईश्वरीय निरंतर याद, जिससे विकर्मों का विनाश होता है। दूसरा है ज्ञान माना इस सारे ब्रह्माण्ड, सृष्टि की आदि-मध्य-अन्त कैसे होती है, जब यह नॉलेज हो तब ही (Then only) इस लाइफ में प्रैक्टिकल चेंज आ सकती है और हम भविष्य प्रालब्ध अच्छी बना सकते हैं। तीसरी प्वाइन्ट है क्वालिफिकेशन तो हमको सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण अवश्य बनना है तब ही देवता बन सकते हैं। तो अपने आपको चलते-फिरते, खाते-पीते इन तीनों प्वॉइन्ट पर ध्यान देना जरूरी



याद से विकर्म विनाश।



इसलिए स्व अध्ययन(स्वाध्याय) का महत्व सर्वोपरी है। मुरली को अपने रीति बैठ कर बहुत ही गहराई से पढ़ना है और हर एक प्वाइंट्स की गहराई में जाना है।
क्योंकि ये ज्ञान पारे के समान अति सूक्ष्म है। जो नियम को पूरा करने के लिए सिर्फ मुरली सुन लेने से समझ में नहीं आएगा। और ज्ञान समझ में नहीं आएगा तो प्रैक्टिकल में भी उसे उपयोग में नहीं ला सकेंगे।





है। इस एक ही जन्म में ज्ञान बल, योग बल और दैवी गुणों की धारणा की जाती है। तीनों का आपस में कनेक्शन है ज्ञान बिगर योग नहीं लग सकता और योग बिगर दैवी गुणों की धारणा नहीं होती, इन तीनों प्वॉइन्ट पर सारी जीवन का आधार है, तब ही विकर्मों का खाता खलास हो अच्छे कर्म बनते हैं। इसे ही ईश्वरीय जीवन कहा जाता है।

माँ सरस्वती के महावाक्य:

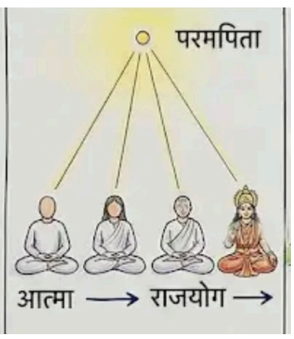
Note it down





भारत का प्राचीन योग

परमात्मा द्वारा सिखाया हुआ है



अपना यह ईश्वरीय योग भारत में प्राचीन योग के नाम से मशहूर है। इस योग को अविनाशी योग क्यों कहते हैं? क्योंकि अविनाशी परमपिता परमात्मा द्वारा सिखाया गया है। भल योग और मनुष्य आत्मायें भी सिखाती हैं इसलिये योगाश्रम वगैरा खोलते रहते हैं परन्तु वो प्राचीन योग सिखला नहीं



सकते। अगर ऐसा योग होता तो फिर वो बल कहाँ! भारत तो दिन प्रतिदिन निर्बल होता जाता है इससे सिद्ध है वह योग अविनाशी योग नहीं है, जिसके साथ योग लगाना है वह खुद ही सिखला सकता है। बाकी औरों से तो योग लगाना ही नहीं है तो फिर सिखलायेंगे कैसे? यह तो स्वयं परमात्मा ही कार्य कर सकता है, वही हमें पूरा भेद बता सकता है। बाकी तो सब तरफ कहते रहते हैं, हम योग सिखलायेंगे। यह तो हम जानते हैं कि सच्चा योग तो खुद परमात्मा ही सिखलाए सूर्यवंशी चन्द्रवंशी घराना व दैवी राज्य स्थापन करते हैं। अब वो प्राचीन योग परमात्मा आकर कल्प-कल्प हमें सिखलाते हैं। कहते हैं हे आत्मा मुझ परमात्मा के साथ निरन्तर योग लगाओ तो तुम्हारे पाप नष्ट हो जायेंगे। अच्छा, ओम् शान्ति।









ये अव्यक्त इशारे -



परोपकार की भावना से सम्पन्न बन

अपकारी पर भी उपकार करो



कोई कैसी भी आत्मा सम्पर्क में आये चाहे सतोगुणी, चाहे तमोगुणी सभी के प्रति शुभचिन्तक अर्थात् अपकारी के ऊपर भी उपकार करने वाले।







कभी किसी आत्मा के प्रति घृणा दृष्टि नहीं क्योंकि जानते हैं कि यह अज्ञान के वशीभूत है अर्थात् बेसमझ बच्चा है।

बेसमझ बच्चे के कोई भी कर्म पर घृणा नहीं होती है और ही बच्चे के ऊपर रहम वा स्नेह आयेगा।

जब मनुष्य अपने कर्मों के जाल में फंसकर दुखी होता है और भगवान की शरण लेता है, तब भगवान प्रतिज्ञा करते हैं कि वे उसके सभी पापों और दुखों को हर लेंगे। **श्रीमद्भगवद्गीता (अध्याय 18, श्लोक 66)** में श्रीकृष्ण कहते हैं:

> **सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।**
> **अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामी मा शुचः।।**
>
> **अर्थ:** सभी धर्मों (कर्तव्यों और आश्रयों) को छोड़कर केवल मेरी शरण में आ जाओ। मैं तुम्हें सभी पापों (और उनसे मिलने वाले दुखों) से मुक्त कर दूँगा। शोक मत करो।

इसके अतिरिक्त, गीता के **अध्याय 9, श्लोक 22** में भगवान सुख और सुरक्षा (योगक्षेम) देने का वादा करते हैं:

> *अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।*
> *तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।*
> **अर्थ:** जो अनन्य भक्त मेरा चिंतन करते हुए मेरी उपासना करते हैं, उन नित्य युक्त पुरुषों का 'योगक्षेम' (जो उनके पास नहीं है उसे देना और जो है उसकी रक्षा करना) मैं स्वयं वहन करता हूँ।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने **श्रीरामचरितमानस** के अयोध्याकांड में लक्ष्मण जी के मुख से स्पष्ट कहलवाया है कि कोई भी दूसरा व्यक्ति हमें सुख या दुख नहीं देता, हम केवल अपने कर्मों का फल भोगते हैं:

> **काहू न कोउ सुख दुख कर दाता। निज कृत करम भोग सबु भ्राता।।**
>
> **अर्थ:** संसार में कोई किसी को सुख या दुख देने वाला नहीं है। सब अपने ही किए हुए कर्मों का फल भोगते हैं।

यही बात पौराणिक ग्रंथों के इस प्रसिद्ध श्लोक से भी सिद्ध होती है:

> *सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।*
> *अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसूत्रे ग्रथितो हि लोकः ॥*
> **अर्थ:** सुख और दुख का देने वाला कोई दूसरा नहीं है। यह सोचना कि 'दूसरा मुझे दुख या सुख दे रहा है', दुर्बुद्धि (अज्ञान) है। संसार का हर जीव अपने कर्मों के धागे से बंधा हुआ है। Facebook

If you wish to stay connected, Here is the link







BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Sept 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Sept 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है।
और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010
Revise: 14/06/2026



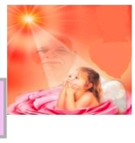
अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.2 अमृतवेले की विशेषतायें



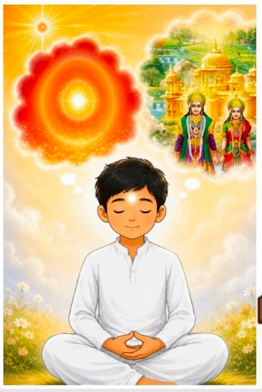
(क) जो बाप का मुख्य फ़रमान है **बच्चे, अमृतवेले उठ कर बाप को याद करो, इस मुख्य फ़रमान को पालन कर सवेरे-सवेरे फ्रेश हो। मुकर्रर टाइम पर याद की यात्रा में रहो, सपूत वा फ़रमानवरदार बनो** तब जाकर राजा बनेंगे। कपूत बच्चे तो झाड़ू लगायेंगे। तकदीरवान बच्चे सवेरे-सवेरे उठ कर बाप को बहुत प्यार से याद करेंगे, बाबा से मीठी-मीठी बातें करेंगे। पास विद् ऑनर होने का पुरुषार्थ कर स्वयं को राजाई के लायक बनायेंगे। बाप से जितना प्रीत-बुद्धि होंगे उतना फिर ऊँच पद पायेंगे। इसलिए सवेरे उठ कर बहुत प्यार से बाप को याद करना है। भल प्रेम के आँसू भी आयें क्योंकि बहुत समय के बाद बाप आकर मिले हैं। अब याद की रफ्तार तेज होनी चाहिए। **तेज याद करने वाले का ही ऊँच नाम होगा। वही विजयमाला का दाना बनेंगे।**





(ख) बच्चे, रात को बाप और वर्से को याद करते, स्वदर्शन चक्र फिराते जब







देखो नींद आती है, तो सो जाओ। फिर अन्त मति सो गति हो जायेगी। फिर सवेरे-सवेरे उठेंगे तो वही प्वाइन्टस याद आती रहेंगी। ऐसे **अभ्यास करते-करते तुम नींद को जीतने वाले बन जायेंगे।** जो करेगा सो पायेगा। करने वाले का देखने में आता है, चलन प्रसिद्ध होती है। नींद को जीतने वाले बनो, तो तुम बाप के नज़दीक आते जायेंगे।

(ग) बच्चों को समझाया जाता है कि दूसरों को करेन्ट देना है, तो रात्रि को भी जागो, सवेरे उठ कर जितना बाप को याद करेंगे उतना कशिश होगी, बाबा भी लाइट देंगे।



माया को कैसे जाने...?

गीता के 7वें अध्याय के 14 श्लोक में यह संपूर्ण स्पष्ट रीति बताया है कि अगर त्रिगुणी माना सतो रजो तमो गुण से निर्मित माया को जानना है तो हमें परमात्मा अर्थात शिव बाबा की शरण में संपूर्ण समर्पण होकर चलना होगा - ये एकमात्र उपाय है

कोई भी मनुष्य आत्मा को अपना आधार नहीं बनाना है।

यह बात कुछ हद तक ठीक है कि जब तक हम ज्ञान में नये होते है तो हमें निश्चय इतना पक्का नहीं होता है तो सिर्फ तब तक हम किसी के क्लास सुने या किसी से ज्ञान योग के लिए कुछ हद तक मदद ले मन मत

लेकिन अगर हमें माया को संपूर्ण रीति जानना है एवं उसके सामने विजयी होना है तो हमारा आधार सिर्फ और सिर्फ शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा और ममा यह तीन ही होने चाहिए - इससे आगे कोई भी माना कोई भी नहीं

दूसरे किसी को भी क्यों फॉलो नहीं करना है।

जो भी आत्माएं हमें माया के बारे में या किसी भी ज्ञान के राज की स्पष्टता के बारे में कुछ भी समझाएंगे उसमें कुछ ना कुछ तो त्रुटि रह ही जाएगी

अब इसमें हम दो उदाहरण लेते हैं

पहला उदाहरण:

मान लो कि एक ब्राह्मण आत्मा जिसको नाम मान शान की कोई भी इच्छा नहीं है उस को 97% या 99% मालूम पड़ चुका है की माया क्या है (100% क्यों नहीं? क्योंकि अभी कोई भी संपूर्ण नहीं बना है ब्रह्मा बाबा के सिवाय)

तो अब यह आत्मा आपको अपने सच्चे दिल से निस्वार्थ भाव से आपको जो कुछ भी समझाएगी वह ऐसा होगा जैसे की मान लो कोई 12वीं कक्षा का विद्यार्थी दूसरी या तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले विद्यार्थी को मैथमेटिक्स के 12 वीं कक्षा के Problems को समझाता हो जो कि उसने पहली कक्षा से लेकर 11वीं कक्षा तक को अपने बल बूते पर पार करके सब कुछ अर्जित करके अब 12वीं कक्षा में पहुंचा है(उसकी खुद की कमाई)
लेकिन वह दूसरी कक्षा का विद्यार्थी बेचारा उसको कैसे ग्रहण कर सकेगा क्योंकि उसकी बुद्धि वहां तक पहुंची ही नहीं है व पहुंच ही नहीं सकती

दूसरा कि वह जो अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा हमें समझा रही है उनकी अपूर्णता भी अर्थात उनमें जो कमी कमजोरीया है वो भी हमारे अंदर unconsciously transfer होकर घर करती जाती है - फिर उसको निकालने के लिए अलग से मेहनत करनी पड़ेगी और अब हमारे पास समय है कहां....?
साथ ही जब हम उस आत्मा से सुनते हैं तो उस आत्मा की याद ना चाहते हुए भी हमको आ ही जाती है। जबकि हमारा लक्ष्य यह है कि निरंतर शिव बाबा की ही याद रहे। निरंतर का अर्थ है - सदा चलनेवाला।
Constant/ without any break or interruption
और सबसे बड़ी बात
जरा सोचो कि दूसरों को (अपूर्ण ब्राह्मण आत्मा) फॉलो करते-करते अगर यह शरीर छोड़ना पड़े तो अंत मति सो गति क्या होगी?
हमको ऐसा लगता है कि उसमें क्या है अंत में तो हम बाबा को याद करते ही शरीर छोड़ेंगे
लेकिन नहीं, "बहुत काल का अभ्यास ही अंत में काम में आयेगा एवं अंत में किसी भी देहधारी की याद ना हो सिवाय एक बाबा के" - भगवानुवाच

तो इसीलिए एक बार थोड़ा सा भी निश्चय हो जाने के बाद हमें मुरली को ही अपना आधार बनाना है

क्योंकि मुरली पढ़ते हैं तो वह मुरली है शिव बाबा और ब्रह्मा बाबा का मन और उनके मन से ही तो यह संपूर्ण ब्रह्मांड/ माया क्रिएट हुई है एवं वह दोनों 100% है तो उनके द्वारा जो भी श्रीमत मिलेगी वह हमें 100% बनाएगी- रिंचक मात्र भी त्रुटि नहीं।

100 % Advantage in All Aspects

इसीलिए जब हम मुरली पढ़ते हैं तो हमारा मन भी बापदादा के साथ ऑटोमेटेकली ही जुड़ जाता है जिससे कि उनकी याद स्वतः ही रहती है और याद के कारण हमारे विकर्म दग्ध होते है और इसी के चलते हमारी बुद्धि की जो ग्रहण शक्ति है वह बढ़ती है एवं धारणा भी स्वतः ही होती जाती है जिसके अंतिम फल स्वरूप माया को हम संपूर्ण रीति समझ जाते हैं

यह तो दुनिया में भी कहते हैं कि अगर किसी दुश्मन को जीतना है तो सबसे पहले उस दुश्मन की स्ट्रैंथ और वीकनेस - इसको जानना चाहिए अर्थात दुश्मन को जानना चाहिए अगर दुश्मन को जान लिया तो उसको हराना कोई बड़ी बात नहीं।

और यह हमेशा याद रहे की जो हम खुद अपने बलबूते पर कमाते हैं वही साथ में रहता है इसीलिए मीठे बाबा कहते हैं कि अपनी घोट तो नशा चढ़े
किसी के द्वारा दिया गया कुछ भी Temporary खुशी तो देगा लेकिन वह अपनी कमाई नहीं है इसीलिए वह खुशी स्थाई नहीं रहेगी

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥
क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥

दूसरे शब्दों में ...
मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है।
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

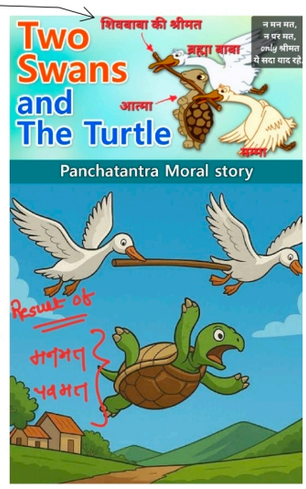
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्॥
हे भारत! तू सब प्रकारसे उस परमेश्वरकी ही शरणमें* जा। उस परमात्माकी कृपासे ही तू परम शान्तिको तथा सनातन परमधामको प्राप्त होगा॥ ६२॥

* लज्जा, भय, मान, बड़ाई और आसक्तिको त्यागकर एवं शरीर और संसारमें अहंता, ममतासे रहित होकर केवल एक परमात्माको ही परम आश्रय, परमगति और सर्वस्व समझना तथा अनन्यभावसे अतिशय श्रद्धा, भक्ति और प्रेमपूर्वक निरन्तर भगवान्‌के नाम, गुण, प्रभाव और स्वरूपका चिन्तन करते रहना एवं भगवान्‌का भजन, स्मरण रखते हुए ही उनके आज्ञानुसार कर्तव्यकर्मोंको निःस्वार्थभावसे केवल परमेश्वरके लिये आचरण करना यह 'सब प्रकारसे परमात्माके ही शरण' होना है।

* अध्याय १८ * २३९

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥
२४० * श्रीमद्भगवद्गीता *

सम्पूर्ण धर्मोंको अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मोंको मुझमें त्यागकर तू केवल एक मुझ सर्वशक्तिमान्, सर्वाधार परमेश्वरकी ही शरणमें आ जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे मुक्त कर दूँगा, तू शोक मत कर॥ ६६॥



फिर पुजारी बनते हो। तो पहली बात है, बाप को याद करो। बाप को याद करने का अभ्यास करने से धारणा होगी। एक के साथ प्रीत नहीं है तो फिर और और के साथ लग जाती है। ऐसी-ऐसी

दूसरा उदाहरण:

आजकल यह दूसरे उदाहरण वाली कैटेगरी की आत्माये ज्यादा देखने में आती हैं जिनको ज्ञान की सच्ची गहराई क्या है वो पता ही नहीं है लेकिन नाम मान शान के चक्कर में (मुझे सब पहचाने, मेरी महिमा करें आदि आदि...) कुछ भी ज्ञान देते रहते हैं जो कि हमें बाबा से दूर करते हैं
अब सोचो कि, उनसे वो अपूर्ण देह अभियान युक्त ज्ञान हमने लिया तो उसकी result एक तो समय हमारे पास already कम है वो अमूल्य समय व्यर्थ चला गया और दूसरा कि वह अधूरा ज्ञान हमको बाबा से/लक्ष्य से ओर ही दूर ले जाएगा
और इतने में ही समय समाप्त हो गया तो...? (चाहे स्वयं का शरीर छूट जाए या विनाश हो जाए - किसी भी रीति से)

Point to ponder deeply...

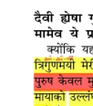
संपूर्णता की मंजिल तक कौन पहुंच नहीं सकता अर्थात किसको धर्मराज के सामने सर झुकाना पड़ेगा।

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥
क्योंकि यह अलौकिक अर्थात् अति अद्भुत त्रिगुणमयी मेरी माया बड़ी दुस्तर है; परन्तु जो पुरुष केवल मुझको ही निरन्तर भजते हैं, वे इस मायाको उल्लंघन कर जाते हैं अर्थात् संसारसे तर जाते हैं॥ १४॥
दूसरे शब्दों में ...
मेरी दिव्य शक्ति माया, जो प्रकृति के तीन गुणों से युक्त है, पर विजय पाना अत्यंत कठिन है।
परन्तु जो मुझमें शरणागत हो जाते हैं, वे इसे आसानी से पार कर लेते हैं।

जो ब्राह्मण आत्माए भगवान के सामने तर्क देती है वह आत्माए कभी भी संपूर्णता की मंजिल तक नहीं पहुंच सकती फिर चाहे उसको कल्प कल्पांतर का भी समय क्यों ना मिले। वास्तव में हमारे पास तो यह संगम युग का छोटा सा समय ही है उसमें भी 90 साल से भी ज्यादा समय तो बीत चुका है।

उनमें भी वह ब्राह्मण आत्माएं जो अपनी कमी कमजोरी के कारण, अपने देह अभिमान वा अहम कार के कारण बाबा जो श्रीमत जिस संदर्भ और जिस भाव से एकदम Crystal clear कर के दे रहे है उस श्रीमत को वैसे का वैसा फॉलो नहीं कर सकती है(माया का सामना करने में अक्षम है)तो वो क्या करती है..?
उस श्रीमत को फॉलो करने के बजाय भगवान को ही, उल्टा उनके सामने, उन्होंने किसी और मुरली में, किसी और संदर्भ से, जो श्रीमत कही है उस श्रीमत का छोटा सा टुकड़ा लेकर स्वयं भगवान/महाकाल को तर्क देकर उस crystal clear श्रीमत को कट करती हैं - अपनी होशियारी/बुद्धिमानी दिखाती है और महाकाल की श्रीमत को कट करती हैं।

अब सोचो, इन आत्माओं को क्या कहेंगे और इन आत्माओं की गति क्या होगी?



अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना

